सत्य साहित्य

वर्ष 2 / अंक 2
जनवरी 2019
Year 2/ No. 2
January
2019

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

प्रीति प्रभु से जोड़ रे मन २
प्रभु जैसा कोई मीत नहीं है,
अनन्य प्रीति सी प्रीति नहीं है,
उस से न मुख मोड़ रे मन ॥१॥

परम पुरुष के पावन नाम में,
पावनरूप परम धाम में,
भ्रम संशय सब छोड़ रे मन ॥२॥
निन्दा कुमति कुसंग कुमत से,
कुटिल कर्म कुभाव कुगति से।
नेह नाता अब तोड़ रे मन ॥३॥

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- नव वर्ष की बधाई
- I-Consciousness
- अहं : साधना के मार्ग में विघ्न
- आत्मिक भावना की खोज - जीवन का लक्ष्य
- पत्र-व्यवहार
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- कैलेंडर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹ 5

नव वर्ष की बधाई!

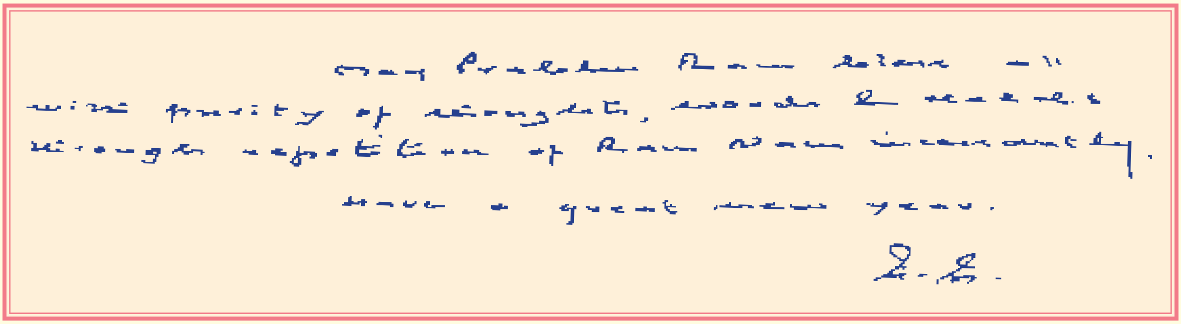
May Prabhu Ram bless all with purity of thoughts, words & deeds through repetition of Ram Naam incessantly.
Have a great new year.
S.S.

आगे नहीं बढ़ने देता – अधर्म। दुराचार साधक को आगे नहीं बढ़ने देता। प्रगति नहीं हो पाती। साधक की उन्नति नहीं हो पाती। हमारे जीवन में हर प्रकार की पवित्रता होनी चाहिए। Purity in thoughts, purity in words and also purity in deeds. May Lord Bless us all with purity of thoughts, purity of words and purity of deeds.

इन तीनों को एक होना चाहिए। जो सोचो, मानो जो मन में है वही बोलो और वही करो। हम सोचते कुछ हैं, बोलते कुछ हैं और करते बिलकुल भिन्न हैं। कैसी personalities हैं हमारी। ऐसे ही हैं न हम। सोचते कुछ हैं, बोलते कुछ हैं और करते इन दोनों से भिन्न हैं। साधक के अन्दर ये दुर्गुण नहीं होने चाहिए। हिम्मत होनी चाहिए, आपकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए। इसके लिए हिम्मत चाहिए, पर सच्चा व्यक्ति ही हिम्मतवान हो सकेगा। झूठा नहीं। झूठे के अन्दर, हिम्मत नहीं हुआ करती।

परमात्म देव ! सन्मार्ग पर चला, भूल से भी कुमार्ग पर न चलें। तेरे पीछे–पीछे चलें। तू ही हमारे जीवन का संचालक बन। तुझे अपने पीछे–पीछे चलाने की कोशिश न करें। तेरे पीछे–पीछे चलें। परमात्मा ! अभिमान हमारा पीछा नहीं छोड़ता। यह पीछा नहीं छोड़ता तो हमारे जीवन में विनम्रता नहीं आती। इतनी मार तू मारता है, इतनी मार तू मारता है, हम न जाने किस मिट्टी के बने हैं कि हमें झुकना नहीं आता।

शुभकामनाएँ ! परमेश्वर की कृपा सदा–सदा सब पर बनी रहे। नेक इन्सान बनें। ऐसे जो एक दूसरे के काम आ सकें। याद रखो मेरी माताओ व सज्जनो, धर्म का सार समझ कर एक दूसरे के काम आओगे तो परमात्मा आपके काम आएगा। नहीं तो वह अपना मुख मोड़ लेता है। ये किसी काम के नहीं। एक दूसरे के काम आना ही प्रेम का चिन्ह है।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी के प्रवचन का अंश, 5.1.2009) ■

अनन्य सुभक्ति राम दे,
परा प्रीति कर दान।
अविचल निश्चय दे मुझे,
अपने पद का ज्ञान।।

I-Consciousness

सत्यानन्द

I am pure consciousness, immortal changeless.
Living awakened spirit soul, enlightened consciousness.[1]
* * * *
Eternal pure consciousness, I'm glowing incandescence.
Indestructible is my, spirit in essence.[3]
* * * *
Like fire in ingot does, fragrance flower abide.
Air permeates bottle, so in body I bide.[7]
* * * *
Like lamp in temple, in body I bide.
Like air in water bag, pearl oyster inside.[10]

Like current in powerhouse, bird in a nest.
So I live within body, but from it divest.[11]

Birth and death are of body, I am ageless.
Light of Spirit I am, beyond time deathless.[12]

Wherever the sun shines, there there's no night.
Likewise life is where I am, like the morning light.[13]
* * * *

Akin to changing houses, like clothes changing.
Birth and death are but two names, great I'm unchanging.[18]

* * * *

In bondage 'I' changes not, forsakes not good sense.
Like gold mixed in concrete, retains its essence.[24]

* * * *

Cutting fetters of *Karma*, washing dirt of sin.
It's all up to me, there's no doubt herein.[26]

Holding on to Ram-Nam, I am fearless today.
In my Self-knowledge all, regal pleasures array.[27]

Causal subtle gross bodies, are acknowledged three.
As in-dwelling spirit, I'm primal energy.[28]

Enveloped in five sheaths, my light scintillate.
Across time extinguishes not, never does abate.[29]

* * * *

Storm of sinful misdeeds, stirs up dust malign.
Cannot shroud but moon of, I-Consciousness mine.[33]

* * * *

Pure I-consciousness mine, when is purged clean.
Fourfold delights beholding itself, moonlike shines pristine.[36]

* * * *

Ram Ram *Mantra* did, all *Karmas* neutralise.
Ram Ram recital did, sins all minimise.[39]

Ram Naam *Jaap* awakened, my I-Consciousness.
Made me nectar drink, pure Self-Consciousness.[4o]

Sadho! I have now become, savouring nectarous Name.
Enlightened Pure Consciousness, free from *Karma* chain. [41]

* * * *

(यह अंश मूलतः भक्ति प्रकाश, अहं भावना, पृष्ठ 194–197 से अनुवादित है।)

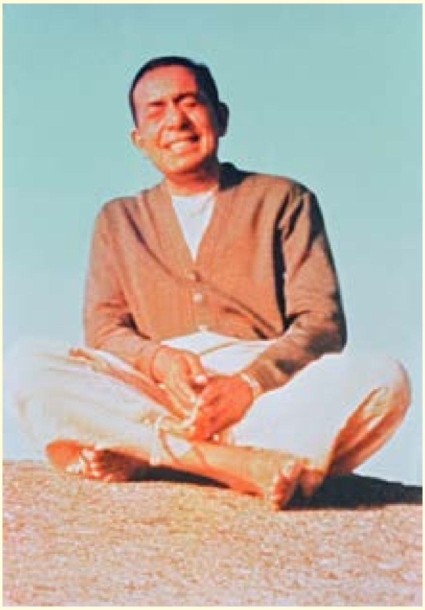

अहं : साधना के मार्ग में विघ्न

प्रेम

साधना करने वाले के रास्ते में कई रुकावटें आया करती हैं, जिनमें अहंकार विशेष है। थोड़ी सी कमाई करके, परमेश्वर की कृपा हो जाती है तो अहं आ जाता है कि मुझमें शक्ति आ गई है। यदि कोई मेरे मन की बात न करे तो क्रोध भी आ जाता है, सोचते हैं कि इसने मेरी बदनामी क्यों करी। अहं–साधना के रास्ते में बड़ा भारी विघ्न है। सहन करें, यत्न करें कि अपने आपको परमेश्वर के हवाले कर दें। यह जो कृपा दी होती है, जब चाहे वापिस भी ली जा सकती है।

कुछ लोग अपने आपको बड़ा मानते हैं और दूसरों को तुच्छ समझते हैं। एक बार महाराष्ट्र में अकाल पड़ा। शिवाजी ने किला बनवाना शुरु कर दिया, यह सोच कर कि कई लोगों को नौकरी मिल जाएगी। समर्थ रामदास जी उधर से गुजरे तो शिवाजी ने उन्हें आगे जाकर यह बात बताई। यह सुन कर समर्थ रामदास जी ने शिवाजी को वहाँ से मिट्टी उठाने को कहा। मिट्टी में से मेंढक का बच्चा निकला। यह देख शिवाजी ने पूछा कि इसको रोटी कौन देता है ? संत ने समझाया, करने वाला कोई और ही है। यह धारणा धारणी चाहिए कि करने वाला दाता है। करने वाला परमेश्वर ही है। यदि उसकी करनी न होती तो हम महाराज जी (स्वामी जी महाराज) के सम्पर्क में न आते।

महाराज जी (स्वामी जी महाराज) ने सारी उम्र सेवा करी। अपने आपको बड़ा नहीं कहलवाया, अपनी पूजा नहीं करवाई। बड़ा वही है जो बड़ा सेवक है। जो अपने आपको बड़ा समझते हैं, वह राम ही जानते हैं कि वह कितना बड़ा है। यहाँ पर जो भी कोई आए हैं जितना समय सेवा में लगा सकें, लगाएँ, अहं न आने दें। परमेश्वर श्री राम तेरी कृपा सब पर हो। तेरी कृपा सब पर हो। परमार्थ का जीवन तेरी कृपा से ही मिलता है, तू ही कृपा कर।

(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के श्री मुख से, साधना सत्संग हरिद्वार, 25 जुलाई 1969, परम पूजनीय श्री महाराज जी की डायरी से) ■

आत्मिक भावना की खोज- जीवन का लक्ष्य

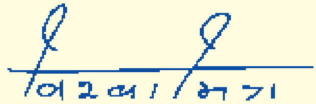

आत्मिक भावनाओं के अन्तर्गत अन्तिम भावना है– अहं भावना। यह वो भावना नहीं है जिससे हम परिचित हैं। यह आत्म भावना है। अहं भाव जिसका देह से सम्बन्ध है वह त्याज्य है। यह त्याज्य नहीं है– यह अहं भावना आत्म भावना है। वह देह भावना है, जिस अहं को हम कहते हैं त्यागने योग्य है, वह अहं भाव हमारे अन्दर नहीं होना चाहिए। यह आत्म भावना होनी चाहिए, वह देह भावना नहीं होनी चाहिए। हम अहं भाव से ज्यादा परिचित हैं, आत्म भावना से बहुत कम। उस अहं भावना की याद दिलाते हैं जो हमारा वास्तविक स्वरुप है।

यह आत्म भाव चमकते हुए हीरे की तरह, जो इस शरीर रुपी कचरे में पड़ा हुआ है, दबा पड़ा है। यह आत्म ज्योति एक चमकते हुए अनमोल हीरे की तरह, इस शरीर रुपी कचरे में दबी पड़ी है। इससे हीरे की चमक कम नहीं होती। वह अपने ही ढंग से चमक रहा है, उसी की चमक से इस शरीर में भी चमक है, सौन्दर्य है। यह शरीर क्यों सुन्दर लगता है इसलिए कि इसे आत्मा से प्रकाश मिल रहा है। उस अनमोल के कारण इसका मूल्य है। नहीं तो यह जड़ है, हाड़ माँस का पुतला है, इसके अन्दर गन्दगी ही गन्दगी भरी है। इसलिए इसे कचरा कहा है। ढेर लगा है कचरे का। कचरा है–उसके भीतर यह अनमोल चीज पड़ी हुई है। जिसे स्वामी जी महाराज ने अहं भाव से सम्बोधित किया है। स्वामी जी कहते हैं, ''कहो, मैं अन्दर छिपा हुआ हूँ इस कचरे में, मैं अन्दर दबा हुआ हूँ इस कचरे के। इस कचरे को जैसे–जैसे हटाते जाओगे तैसे–तैसे ही उस चमकते हुए अनमोल रत्न का प्रकाश बढ़ता जाएगा। अन्ततः ऐसा समय आएगा जब उस प्रकाश के अतिरिक्त और कुछ नहीं रहेगा।'' यही syllabus, यही हमारे लिए परमात्मा ने लम्बी सूची दे रखी है। उस कचरे को धीरे धीरे करके निकालते, फेंकते जाएँगे तो आत्म ज्योति का प्रकटन होगा। उसे आप आत्मा कहिए, परमात्मा कहिए एक ही बात है। भक्त उसे परमात्मा कहता है– भीतर कौन विराजमान है परमात्मा विराजमान है। ज्ञानी उसे आत्मा कहता है तो परमात्मा इसका समाधान करते हैं कि मैं ही आत्मा के रुप में भीतर विराजमान हूँ। दो एक दृष्टान्तों के माध्यम से इसका मूल्य, यह चीज़ क्या है समझने की कोशिश करते हैं।

अर्जुन अन्त में जाकर 18 अध्याय गीता जी के सुनने के बाद अन्तिम एक दो श्लोकों में कहते हैं। हे अविनाशिन! मैंने स्मृति प्राप्त कर ली है। मानो जो भूला हुआ था वह लाभ कर लिया है, वह बात मुझे याद आ गई है कि मैं देह नहीं हूँ। देह मरता है, मैं नहीं मरता। इस सूर्य को तो बादल ढक सकता है, वह जो सूर्य है उसे बादल ढक नहीं सकता, ऐसा सूर्य ऐसी चमक। उस आत्मा में परमात्मा है। एक एक करके जो कचरे की layers हैं, उसको उतारते जाइएगा। लोभ, मोह, अहंकार, काम, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष ये सब कचरा है। यह अन्धकार है। इस अन्धकार को, इनके layers को एक–एक करके, कचरे को साफ करते जाइएगा। वह अनमोल चीज

मलबे में दबी हुई है, उस मलबे को हटाते हो तो नीचे जो चीज़ है वह मिल जाती है। कई दफा, कोई जीवित व्यक्ति दब जाता है तो आप कहते हो कि भई! जल्दी –जल्दी हटाओ नीचे वह मलबे के नीचे दबा हुआ है। कहीं मर ही न जाए।

आज एक राजा ने किसी दूसरे राजा पर आक्रमण कर दिया है। युद्ध जीत लिया है सारी सम्पदा लूट ली है, राजा रानी को मार दिया है। परमेश्वर की करनी देखिए, इनका नन्हा 5 साल का पुत्र, इकलौता पुत्र राजकुमार बच गया। सारा नगर, सारा महल खंडहर हो गया। तोड़ फोड़ इतनी करी है कि महल भी खंडहर हो गया। जब कोई आक्रमण करता है तो ऐसा ही करके जाता है। 5 साल का पुत्र, इकलौता पुत्र बच गया है। कहीं पड़ा रह गया, उनकी नजरों से बच गया। यूँ कहिए जिसे परमात्मा बचाना चाहे, उस बच्चे को बचा लिया, बच गया। कहते हैं, राजा रानी की रुहें आती थीं उस बच्चे का पालन पोषण करने के लिए। सत्य होगा, आ सकती हैं कोई नई बात नहीं स्वयं आती हैं या किसी से पालन पोषण करवाती हैं, एक ही बात है, हमें उससे क्या लेना देना है। उनकी रुहें आती थीं और आकर इस बालक का पोषण करती थीं। राजकुमार बड़ा होता गया। राजकुमार तो नहीं है, भिखमंगा बन गया हुआ है। उसे बोध ही नहीं कि मैं कल राजकुमार था, आज भिखारी। किस्मत का तमाशा है, प्रारब्ध का तमाशा है। जिन बालों में सुगन्धित तेल होना चाहिए था, शरीर से इत्र आदि की खुशबू आनी चाहिए, बू आती है। इसमें जूएँ पड़ी हुई हैं। बाल बनाने वाला कोई नहीं, कटवाने के लिए पैसे नहीं। शरीर पर कपड़े सब फटे–पुराने पहने हुए हैं। हाल–बेहाल, शक्ल–बेशक्ल हुआ हुआ है, कल का राजकुमार जिसे आज सोने की थाली में खाना, खाना था, चांदी की थाली में खाना, खाना था, अनेक कटोरियों के साथ खाना, खाना था। अनेक दाल सब्जियों से खाना, खाना था वह आज मिट्टी के बर्तन में भीख माँग रहा है। यह किस्मत का तमाशा है, किस्मत का खेल है। बीस साल का हो गया। वहीं बरामदे में कहीं सो जाता है। पलंग नहीं, सेज नहीं है, मखमली कपड़े इत्यादि नहीं हैं, बेचारा नीचे ही सो जाता है। 20 साल की आयु हो गई, 15 साल उसने खंडहर में ही बिता दिए हैं। न जाने कहाँ जाकर भीख माँगता है, मिट्टी के बर्तन में खाता है, एक ही बार खाता है या दो बार खाता है। दुबला पतला हो गया है, लम्बे–लम्बे बाल हो गए हैं। आज एक संत महात्मा का आगमन हुआ है। कभी जब महल महल था उस समय प्रायः आगमन होता था, आज भी उसी महल को देखने को आया है, जो बिल्कुल खंडहर हो गया है कुछ भी शेष नहीं है। बरामदे में पड़े हुए युवक को देखा, देख कर कुछ याद आया। उस बालक के पास खड़े होकर पूछा,' बेटा! क्या नाम है तेरा।''

यह आत्म भाव चमकते हुए हीरे की तरह, जो इस शरीर रुपी कचरे में पड़ा हुआ है, दबा पड़ा है। यह आत्म ज्योति एक चमकते हुए अनमोल हीरे की तरह, इस शरीर रुपी कचरे में दबी पड़ी है। इससे हीरे की चमक कम नहीं होती। वह अपने ही ढंग से चमक रहा है, उसी की चमक से इस शरीर में भी चमक है, सौन्दर्य है। यह शरीर क्यों सुन्दर लगता है इसलिए कि इसे आत्मा से प्रकाश मिल रहा है। उस अनमोल के कारण इसका मूल्य है।

''सूरज!'' ''नहीं बेटा! तेरा नाम है सूर्य प्रताप सिंह। यह नाम तेरा मैंने ही रखा था। बच्चा था तू। मैंने कहा था, तू सूर्य की तरह चमकेगा।'' ''बाबा!'' मिट्टी के बर्तन को आगे करके राजकुमार ने कहा, ''मिट्टी के बर्तन में खाना, खाने वाला, फटे–पुराने कपड़े पहने, मेरे बालों की हालत देखो, क्या इसी को चमकना कहा जाता है?'' ''नहीं बेटा! तू आज भी राजकुमार है। तुझे वह खोया हुआ सब कुछ मिल जाएगा। चल मेरे साथ उठ यहाँ से।'' उसे उठा कर ऐसी जगह पर ले गए, जहाँ मलबे का ढेर लगा हुआ था। दो चार मजदूर मँगवाए, स्वयं भी लगा। उस मलबे को हटवाया, बहुत बड़ा खजाना दबा हुआ मिला। इस संत को पता था, राजा ने वहाँ खजाना दबाया हुआ है। कुछ ही मिनटों में, कुछ ही घंटों में वह भिखारी, शहनशाहों का शहनशाह बन गया। यह तो रही उस खजाने की बात, जो एक मामूली भौतिक शहनशाहों का शहनशाह बनाता है।

जिसे असली खजाना मिल जाता है, जिसे आत्मा कहा जाता है, परमात्मा कहा जाता है वह बादशाहों का बादशाह बन जाता है, शहनशाहों का शहनशाह बन जाता है। स्वामी राम तीर्थ अपने आपको बादशाह राम कहा करते। मैं बादशाह राम, शहनशाहों का

शहनशाह। अमेरिका में गए कहा, मैं स्वयं भी बादशाह हूँ और आपको भी बादशाह बनाने के लिए आया हूँ। मानो आत्मबोध करवाने आया हूँ, यह बादशाह बना देता है। एक भिखारी जो अपने आपको शरीर समझने वाला है, जो अपने आपको देह समझने वाला है, जो मरण धर्म समझने वाला है, उसे जब यह बोध हो जाता है कि इस सृष्टि में कोई पैदा नहीं हुआ जो मुझे मार सके तो वह बादशाह बन जाता है, शहनशाहों का शहनशाह बन जाता है। शरीर मरता है, मैं कभी नहीं मरता, जो मैं हूँ वह कभी नहीं मरता। जिस प्रकार परमात्मा अविनाशी है, उसका अंश, मैं भी अविनाशी हूँ। जैसे परमात्मा को कोई नहीं मार सकता, मुझे भी कोई नहीं मार सकता।

एक संत महात्मा और ढंग से समझाते हैं। एक जिज्ञासु आज किसी महात्मा के पास गया कहा, ''गुरुजन आप हमेशा कहते हो, आत्मतत्व को प्राप्त करो। इतनी मुद्दत हुई है मुझे यह संघर्ष करते हुए, साधना करते हुए, मैं अभी तक सफल नहीं हुआ।'' कहा,''बेटा! सामने चूल्हा पड़ा है, इस वक्त मुझे चिलम पीनी है, उसमें देखो कोई अंगार पड़ा हुआ है तो मेरे लिए ले आओ। मैं इसे चिलम में डाल कर तम्बाकू पीना चाहता हूँ।'' गया, जाकर राख को इधर –उधर किया, लकड़ी पड़ी थी, लकड़ी के साथ राख इधर–उधर करता जाता है, कोई अंगार छोटा–बड़ा नहीं मिला। हाथ लगा कर देखा राख गर्म तो है, पर उसमें कोई अंगार नहीं मिल रहा। आकर कहता है, ''महाराज ! क्षमा करें, राख गर्म जरुर है पर बहुत खोज करने के बावजूद मुझे कोई अंगार मिला नहीं, कोई धधकता हुआ, जलता हुआ कोयला दिखाई नहीं दिया।'' गुरु महाराज स्वयं गए उसे पास बिठाया हुआ है। स्वयं राख धीरे धीरे इधर –उधर करते जा रहे हैं, अन्त में जाकर तो एक कोयला, लाल कोयला मिल गया राख के नीचे दबा है। ''देख तू कहता था, इसमें कोयला नहीं है अंगार नहीं है देख कैसे चमक रहा है। तेरी साधना में भी यही दोष है। तेरे अन्दर धैर्य की कमी है। अध्यात्म धैर्य माँगता है, इसमें निराशा नहीं है। आदमी थक जरुर जाता है, आदमी हार जरुर जाता है लेकिन निराशा नहीं, लगा रहता है। काश ! जिस धैर्य से अब यह राख मैंने हटाई है, यदि तू इसी धैर्य से हटाता तो यह अंगार तुझे मिलता। मैं कोई बाहर से नहीं लेकर आया, यहीं पड़ा हुआ था। तूने भी खोजा है, मैंने भी खोजा है तूने कह दिया है नहीं मिला। मुझे मिल गया। धैर्य की आवश्यकता है। भक्ति के मार्ग, ज्ञान के मार्ग में, अध्यात्म के मार्ग में, यूँ कहिए बहुत धैर्य की आवश्यकता है, अधीर नहीं होना है। इसी अंगार को प्राप्त करना है इसी अनमोल चीज़ को प्राप्त करना है।''

जिसे असली खजाना मिल जाता है, जिसे आत्मा कहा जाता है, परमात्मा कहा जाता है वह बादशाहों का बादशाह बन जाता है, शहनशाहों का शहनशाह बन जाता है।

अब इसे किसी भी नाम से पुकारें, यही जीव का लक्ष्य है। सारी की सारी दुविधाएँ, समस्याएँ, अन्धकार दूर हो जाते हैं जब व्यक्ति को यह प्राप्त हो जाता है। इस वक्त देह के साथ इतना तादात्म्य हुआ हुआ है कि इसकी खोज की आवश्यकता ही नहीं समझते क्योंकि हमारा काम चल रहा है। कैसी अज्ञानता है, कैसी मूढ़ता है ? यहाँ आने वाला भी यदि यह सोचे कि क्या चाहिए, घर चाहिए मिला हुआ है, पति चाहिए मिला हुआ है, संतान चाहिए मिली हुई है, पैसे चाहिए खाने पीने के लिए, ओढ़ने के लिए इत्यादि इत्यादि जो कुछ भी चाहिए सब कुछ उपलब्ध है । what else do we need! कितनी बदकिस्मती की बात है, जिस काम के लिए जन्म मिला है, शरीर मिला है उसकी याद ही नहीं आती। आदमी इस कचरे में ही पड़ा है, मलबे में ही दबा हुआ बहुत संतुष्ट है।

शरीर के साथ तादात्म्य को तोड़ना, परमात्मा से तादात्म्य को जोड़ना – जीवन का लक्ष्य है। इसे परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए संत कहते हैं। शरीर से तादात्म्य टूटेगा तो परमात्मा से तादात्म्य हो जाएगा। मैं इसे otherwise कहता हूँ। आप परमात्मा से तादात्म्य करो शरीर से तादात्म्य अपने आप छूट जाएगा। Do not worry about that उसके पीछे न पड़े रहो। परमात्मा से तादात्म्य जो है वह आपका जुड़ना चाहिए। पहले अपने शरीर से, अपनों से, पुत्र से, पुत्र के पुत्रों से, तादात्म्य तो बढ़ता ही जाता है। संसार से तादात्म्य तोड़ना इतना आसान नहीं। इसे जोड़ो परमात्मा के साथ, बाकी काम परमात्मा अपने आप कर लेता है। परमात्मा के साथ तादात्म्य जुड़ना चाहिए। जोड़िएगा।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी का प्रवचन, 21.10.2009) ■

पत्र-व्यवहार

गुरुदेव,

आपके पत्र से जीवन में एक आध्यात्मिक क्रान्ति हुई, एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है। प्रतीत होता है जैसे कि मोह–माया, अहंकार, क्रोध, द्वेष, अहं और मान–अपमान सबका हनन हो रहा है और परमात्मा की प्राप्ति की जिज्ञासा और गहरी हो गई है। आपके आशीर्वाद से अब जीवन, ध्यान, सिमरन और जप–तप में रम गया है जिसके कारण ऐसी आशा जगती है कि अब परमात्मा की प्राप्ति इसी जीवन में निश्चित हो गई है और जन्म व मरण के चक्कर से छुटकारा मिलेगा। परन्तु इतनी जल्दी एक सांसारिक व्यक्ति को इसकी प्राप्ति होगी, इसकी उम्मीद नहीं थी।

स्वामी जी महाराज और गुरुजनों के आशीर्वाद से ही यह कृपा प्राप्त हुई है। अब ऐसा प्रतीत होता है कि परमात्मा मेरे शरीर में विद्यमान है और उसके विराट स्वरुप को और आपके स्वरुप को अपनी आत्मा के अन्दर विराजमान मानता हूँ। मैं ध्यान के लिए बैठता हूँ, तो मूलाधार चक्र से आज्ञा चक्र तक (30 से 45 मिनट) बैठने पर मेरी आत्मा में राम राम का ध्यान चलता रहता है और अचानक उसमें नासिका से साँसों की तरंगें ज़ोर ज़ोर से आने लगती हैं। मेरे शरीर में आज्ञाचक्र पर दिव्य विराट परमात्मा का स्वरुप विराजमान हो जाता है। ऐसा महसूस होता है कि ये सब आपकी कृपा और गुरुजनों के आशीर्वाद से हुआ है। सूक्ष्म शरीर में, आत्मा में, राम–राम का नाद 8 प्रहर, 24 घण्टे सुनाई देता है। सात माह से ऐसा मीठा अमृत सिमरन बरस रहा है।

आपने एक दृष्टांत सुनाया था, कि कई मज़दूर सुबह से शाम तक अलग–अलग समय पर कार्य करते हैं, फिर भी राजा सबको समान मज़दूरी देता है। परन्तु यह दास थोड़ी सी मज़दूरी करने पर ही परमात्मा की कृपा का पात्र बन गया है। यह ब्रह्म कमल जो खिला है, इसे सँवारने, सहजने और आगे के आध्यात्मिक मार्ग की प्रेरणा दीजिएगा।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी को लिखा हुआ एक साधक का पत्र)

" श्रीराम "

"श्रीरामशरणम्"
8-रिंग रोड, लाजपत नगर-4
नई दिल्ली - 110024

पोस्ट कार्ड POST CARD

भारत INDIA 10

पिन PIN

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

सितम्बर से दिसम्बर 2018

साधना सत्संग, खुले सत्संग, उद्घाटन एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **सरदारशहर,** राजस्थान में 14 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 1791 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जम्मू,** में 21 से 23 सितम्बर तक खुला सत्संग लगा जिसमें 194 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सिडनी,** आस्ट्रेलिया में 29 से 30 सितम्बर तक खुला सत्संग लगा जिसमें 14 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **गोआ** में 30 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 30 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 30 सितम्बर से 3 अक्तूबर तक परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।

कपूरथला

फाज़लपुर, कपूरथला, पंजाब में 17 व 18 नवम्बर को खुला सत्संग बहुत भाव–चाव और उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें 22 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

यहाँ के भव्य और सुहावने वातावरण एवं खुले प्रांगण में बैठ कर साधकों न खूब जाप किया। यहाँ के भव्य सत्संग हॉल में करीब दो हज़ार साधक बैठ सकते हैं और 700 साधकों के ठहरने की व्यवस्था है।

कपूरथला से परम पूजनीय स्वामी जी महाराज का सम्पर्क बहुत पुराना है। प्रवचन पीयूष के अनुसार, 1936 में स्वामी जी महाराज ने दो साधना सत्संग हरिद्वार में लगाए। इसके बाद तीन साधना सत्संग होशियारपुर, लायलपुर और कपूरथला में सम्पन्न हुए। परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज तथा श्री महाराज जी का सम्पर्क कपूरथला में साधकों से निरन्तर बना रहा। 16 मई 1994 में, श्री महाराज जी कपूरथला आए और नाम दीक्षा सम्पन्न हुई। मार्च 1995 में यहाँ तीन रात्रि साधना सत्संग लगा।

22 जनवरी 1997 को गाँव फाज़लपुर, जो कि कपूरथला से 7 कि.मी. पर है, श्री महाराज जी ने दो एकड़ के भव्य प्रांगण में श्रीरामशरणम् का शिलान्यास किया। मार्च 1998 में श्री महाराज जी ने फाज़लपुर में 14 दिन निवास किया।

27 फरवरी 2002, को श्रीरामशरणम् का उद्घाटन हुआ। तब से यहाँ पर सभी निर्धारित कार्यक्रम सुचारु रुप से चल रहे हैं। यहाँ के साधकों की भावना है:

''हम हो गए मालोमाल, राम तूने इतना दिया''

- **गुरदासपुर,** पंजाब में 5 से 7 अक्तूबर तक खुला सत्संग लगा जिसमें 373 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 10 से 19 अक्तूबर तक रामायणी साधना सत्संग लगा।
- **हिसार**, हरियाणा में 20 से 21 अक्तूबर तक खुला सत्संग लगा जिसमें 26 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बानमोर,** मध्य प्रदेश में 24 अक्तूबर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 191 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कठुआ,** जम्मू एवं कश्मीर में 28 अक्तूबर को खुला सत्संग लगा जिसमें 93 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **पठानकोट,** पंजाब में 3 व 4 नवम्बर को खुला सत्संग लगा जिसमें 159 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 11 से 14 नवम्बर तक परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा। 11 नवम्बर को 25 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **ग्वालियर,** मध्य प्रदेश में 23 से 26 नवम्बर तक साधना सत्संग लगा जिसमें 235 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **न्यू राजेन्द्र नगर,** दिल्ली में 30 नवम्बर को प्रातः 11 से अपराह्न 12:30 बजे तक विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का कार्यक्रम हुआ।
- **जालन्धर,** पंजाब में 2 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 110 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भिवानी,** हरियाणा में 8 व 9 दिसम्बर को खुला सत्संग लगा जिसमें 18 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भोपाल,** मध्य प्रदेश में 9 से 11 दिसम्बर तक विशेष सत्संग लगा जिसमें 168 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सूरत,** गुजरात में 15 व 16 दिसम्बर तक खुला सत्संग लगा जिसमें 184 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दाहोद,** गुजरात में 16 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन, प्रवचन एवं नाम दीक्षा के कार्यक्रम का आयोजन हुआ।
- **पेटलवाद,** मध्य प्रदेश में 17 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन, प्रवचन एवं नाम दीक्षा के कार्यक्रम का आयोजन हुआ।
- **बोलासा,** मध्य प्रदेश में 18 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन, प्रवचन एवं नाम दीक्षा के कार्यक्रम का आयोजन हुआ।
- **कल्याणपुरा,** मध्य प्रदेश में 19 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन, प्रवचन एवं नाम दीक्षा के कार्यक्रम का आयोजन हुआ।
- **कुशलगढ़,** मध्य प्रदेश में 20 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन, प्रवचन एवं नाम दीक्षा के कार्यक्रम का आयोजन हुआ।
- **देवास,** मध्य प्रदेश में 25 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन, प्रवचन एवं नाम दीक्षा के कार्यक्रम का आयोजन हुआ।
- **सुजानपुर,** पंजाब में 29 से 30 दिसम्बर तक खुले सत्संग का आयोजन हो रहा है।
- **होशियारपुर,** पंजाब में 30 दिसम्बर को खुले सत्संग का आयोजन हो रहा है।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में सितम्बर, अक्तूबर और नवम्बर में साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् 83 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **अमरपाटन,** मध्य प्रदेश में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण कार्य तेज़ी से चल रहा है।
- **धारीवाल,** पंजाब में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है। ■

Sadhna Satsang (January to December 2019)		
Indore	4 to 7 January	Friday to Monday
Hansi	1 to 4 February	Friday to Monday
Haridwar	13 to 16 March	Wednesday to Saturday
Haridwar	15 to 20 April	Monday to Saturday
Haridwar	30 June to 3 July	Sunday to Wednesday
Haridwar (Guru Purnima)	11 to 16 July	Thursday to Tuesday
Haridwar (Ramayani)	29 September to 8 October	Sunday to Tuesday
Haridwar	11 to 14 November	Monday to Thursday
Gwalior	22-25 November	Friday to Monday

Open Satsang (January to December 2019)		
Jhabua	13 to 15 January	Sunday to Tuesday
Bikaner	19 & 20 January	Saturday & Sunday
Pilibanga	9 & 10 February	Saturday & Sunday
Bilaspur	15 to 17 February	Friday to Sunday
Delhi (Holi)	20 to 22 March	Wednesday to Friday
Jhabua (Maun Sadhana)	5 to 14 April	Friday to Sunday
Bhareri	14-Apr	Sunday
Kandaghat, HP	12-May	Sunday
Manali	14 to 16 June	Friday to Sunday
Saylorsburg, USA	27 to 30 June	Thursday to Sunday
Delhi	27 to 29 July	Saturday to Monday
Rohtak	10 to 11 August	Saturday & Sunday
Ratangarh	31 Aug-1 Sep	Saturday to Sunday
Rewari	7 to 8 September	Saturday & Sunday
Hisar	14 - 15 September	Saturday to Sunday
Gurdaspur	20 - 22 September	Friday to Sunday
Sydney	28 to 29 September	Saturday & Sunday
Jammu	11 to 13 October	Friday to Sunday
Alampur	20-Oct	Sunday
Pathankot	2 to 3 November	Saturday & Sunday
Amritsar	10-Nov	Sunday
Kathua	17-Nov	Sunday
Fazalpur	30 Nov to 1 Dec	Saturday & Sunday
Bhiwani	7 to 8 Dec.	Saturday & Sunday
Sujanpur	13 to 15 Dec	Friday to Sunday
Surat	21-22 December	Saturday & Sunday
Hoshiarpur	29-December	Sunday

Purnima (January to December 2019)	
21 January	Monday
19 February	Tuesday
21 March	Thursday
19 April	Friday
18 May	Saturday
17 June	Monday
16 July	Tuesday
15 August	Thursday
14 September	Saturday
13 October	Sunday
12 November	Tuesday
12 December	Thursday

Naam Deeksha in Shree Ram Sharnam Delhi (January to December 2019)		
27 January	Sunday	11.00 AM
24 February	Sunday	11.00 AM
24 March	Sunday	11.00 AM
21 April	Sunday	10.30 AM
26 May	Sunday	10.30 AM
16 July	Tuesday	4.00 PM
25 August	Sunday	10.30 AM
22 September	Sunday	10.30 AM
20 October	Sunday	10.30 AM
17 November	Sunday	11.00 AM
22 December	Sunday	11.00 AM

Naam Deeksha in Other Centres (January to December2019)		
06-Jan	Sunday	Indore, MP
11-Jan	Friday	Kupda, Banswara, Rajasthan
12-Jan	Saturday	Saatsera Badi, Rajasthan
13-Jan	Sunday	Jhabua, MP
20-Jan	Sunday	Bikaner, Rajsthan
03-Feb	Sunday	Hansi, Haryana
10-Feb	Sunday	Jandiala, Punjab
10-Feb	Sunday	Pilibanga, Rajasthan
17-Feb	Sunday	Bilaspur, HP
26-Mar	Tuesday	Narrot Mehra, Punjab
13-Apr	Saturday	Rupdiya, Nepal
14-Apr	Sunday	Jawali, HP

14-Apr	Sunday	Bhareri, HP
21-Apr	Sunday	Lambasa, Fiji
21-Apr	Sunday	Mani, Fiji
28-Apr	Sunday	Suva, Fiji
05-May	Sunday	Batala, Punjab
12-May	Sunday	Kandaghat, HP
16-Jun	Sunday	Manali, HP
23-Jun	Sunday	Ramgarh, Chandoli, UP
27-Jun	Thursday	Saylorsburg, USA
30-Jun	Sunday	Saylorsburg, USA
11-Aug	Sunday	Rohtak, Haryana
01-Sep	Sunday	Rattangarh, Rajasthan
08-Sep	Sunday	Jalandhar, Punjab
08-Sep	Sunday	Rewari, Haryana

15-Sep	Sunday	Hisar, Haryana
22-Sep	Sunday	Gurdaspur, Punjab
29-Sep	Sunday	Sydney, Australia
13-Oct	Sunday	Jammu, J&K
20-Oct	Sunday	Alampur, HP
03-Nov	Sunday	Pathankot, Punjab
10-Nov	Sunday	Amritsar, Punjab
17-Nov	Sunday	Kathua, J&K
22,23,24 Nov.	Fri, Sat, Sunday	Gwalior, MP
01-Dec	Sunday	Fazalpur, Punjab
08-Dec	Sunday	Bhiwani , Haryana
15-Dec	Sunday	Sujanpur, Punjab
22-Dec	Sunday	Surat, Gujrat
29-Dec	Sunday	Hoshiarpur, Punjab

बच्चों के लिए

'Mind-Jar'

Dear Children ! Here is a fun activity for you. It helps us to understand Mindfulness.

Being mindful helps us deal with stress and calms us down. It also enables us to focus.

- Take a glass jar.
- Fill it with water.
- Add a tablespoon full of raw moong dal in it.
- Close the lid tight and shake vigorously.

What do you see?

This is what our mind looks like, with thoughts circling all over inside it.

Now let the jar rest for 5 minutes.

What do you see now?

This is what our mind looks like when we sit quietly and concentrate.

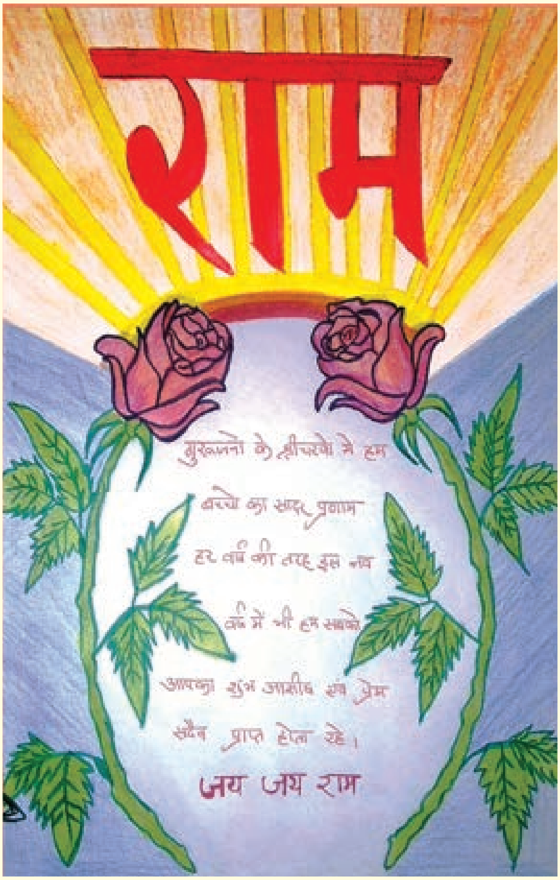

Let's sit quietly, with our eyes shut for 5 minutes. Is your mind now as clear as the water?

Now that your mind is clear, not too cluttered with thoughts:

- Do you hear the friend within?
- What does it sound like?
- What does it tell you?
- Have you ever heard it before ? When?

Can you draw what it looks like?

If you found this activity helpful, practice it everyday.

Sit quietly for 5 minutes everyday and experience how your mind becomes calm. ■

Find the 9 characters from Shree Ramayan ji

D	S	H	C	B	D	Y	K	B	I
G	R	G	T	H	M	A	O	H	F
H	H	K	Z	A	G	X	L	W	A
L	G	J	J	R	A	A	V	A	N
S	I	T	A	A	F	E	K	G	Q
R	F	X	K	T	T	S	L	V	H
U	U	N	W	V	A	A	P	Z	N
P	O	A	Q	W	H	Y	R	J	T
N	P	E	M	A	I	N	U	A	K
A	L	A	K	S	H	M	A	N	A
K	H	J	A	A	R	T	F	A	A
H	A	N	U	M	A	N	D	K	P
A	E	P	S	W	M	Y	C	I	N
T	H	A	H	G	L	Y	N	T	L
R	B	A	A	R	O	N	Q	A	A
A	A	E	L	S	R	I	X	H	S
H	R	D	Y	U	I	U	H	P	R
M	E	R	A	K	T	K	A	Q	E

Answer :

Top to Bottom: Bharat, Kaushalya, Ram, Janak, Srupnakha

Left to Right: Sita, Lakshman, Hanuman, Raavan

सर्वशक्तिमय राम जी, अखिल विश्व के नाथ।
शुचिता सत्य सुविश्वास दे, सिर पर धर के हाथ।।

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्यौगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924